शिष्यता के अनिवार्य तत्व

मसीही जीवन के लिए अनिवार्य तत्व
अगुवों की मार्गदर्शिका

यीशु कौन है?

अध्याय 5 : यीशु के मित्र व शिष्य

परिचय

यह अध्याय शिष्यों के लिए आवश्यक मॉड्यूल का एक भाग है, जिसे "यीशु कौन है?" शीर्षक दिया गया है। सात अध्यायों की यह श्रृंखला मसीही दृष्टिकोण, उसकी पहचान, कार्य, शिक्षाओं व मृत्यु से यीशु मसीह के व्यक्तित्व को प्रस्तुत करती है। यीशु मसीह विश्वास व धर्म का केन्द्र–बिन्दु है, इसलिए शिष्यों के लिए यीशु को जानना, और जो लोग नये विश्वासीगण हैं, उनके लिए यह जानना बहुत ज़रूरी है कि कौन सी बातें यीशु को अनोखा तथा हमारी भक्ति व अनुपालन के योग्य बनाती है। आपके प्रतिभागी विभिन्न संस्कृति या पृष्ठभूमि से सम्बन्धित हो सकते हैं, जो यीशु के अस्तित्व व शिक्षाओं के बारे में अलग विचार रखते होंगे। यह श्रृंखला शिष्यता के क्षेत्र में अध्ययन करने के लिए अति उत्तम बुनियाद साबित होगी।

अपेक्षित श्रोतागण

इस पाठ्यक्रम के लिये अपेक्षित श्रोतागण नये विश्वासी या उद्धार से सम्बन्धित बुनियादी मसीही सिद्धान्तों पर पुनः विचार करने के इच्छुक मसीही लोग हैं। जो लोग सुसमाचार प्रचार करने या लोगों को शिष्य बनाने की तैयारी कर रहे हैं; वे इस पुस्तक की विषय–वस्तु से लाभान्वित हो सकते हैं। यह पाठ्यक्रम अपेक्षा करती है कि पाठकों ने यीशु को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार करने का निर्णय ले लिया है और वे मसीहीयत के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहते हैं।

अगुवों की मार्गदर्शिका को उन अध्यायों या पाठों को तैयार करने हेतु सहायता करने के लिये बनाया गया, जिसे www.dehindi.org पर प्राप्त "शिष्यता के अनिवार्य तत्व सामग्री" के साथ उपयोग किया जा सके।

बाइबल के हवालों को पवित्र बाइबल, बाइबल सोसाइटी ऑफ इण्डिया (बी.एस.आई.) से लिया गया है। इन हवालों को प्रकाशित करने की अनुमति ली गयी है। इसके सारे अधिकार आरक्षित हैं।

अन्य सभी सामग्री © 2019 ट्रांस वर्ल्ड रेडियो कनाडा है, और इसका उपयोग किसी भी तरह से किया जा सकता है, जब तक आप इसका उपयोग मसीह के लिए दुनिया तक पहुंचने के उद्देश्य से करते हैं और सामग्री के उपयोग के लिए शुल्क नहीं लेते हैं। अधिक लाइसेंस विवरण देखें: www.discipleshipessentials.org/licensing

यीशु कौन है?

अध्याय 5 : यीशु के मित्र व शिष्य

उद्देश्य

इस अध्याय में हम इस धरती पर यीशु के सम्बन्धों के आधार पर यीशु के बारे में सीख सकते हैं।

अगुवों के नोट्स

यीशु के स्वर्गारोहण पश्चात्, इस संसार में तीन प्रकार के साधारण लोग रह गए, जिन्होंने असाधारण परमेश्वर का मानवीय रूप में सामना किया। वे अपनी शक्ति से किसी ऐसे आन्दोलन की शुरूआत नहीं कर सकते थे, जो संसार के हर एक छोर तक पहुंच जाए – परन्तु पवित्र आत्मा की सहायता से उन्होंने बड़े अद्भुत काम किये। यीशु ने अपना समय लोगों को व्यक्तिगत् रूप में अनुशासित करने में खर्च किया। प्रारम्भिक कलीसिया साधारण पुरूषों, व स्त्रियों, पापियों, बच्चों और समाज के तुच्छ लोगों को मिलाकर बनी हुई थी। इससे पता चलता है कि हमें परमेश्वर को प्रभावित करने के लिये धन या शक्ति की नहीं, परन्तु विश्वास की आवश्यकता होती है। इससे हमें यह भी शिक्षा मिलती है कि हमें स्वयं को दूसरों से उच्च नहीं समझना चाहिए, क्योंकि उद्धार सभी के लिए प्रस्तावित किया गया है। यीशु ने स्त्रियों व बच्चों को, पुरूषों की समानता में देखा (हालांकि उस समय समाज में स्त्रियों को निचला दर्जा दिया जाता था)। यीशु के लिये, इस बात का कोई महत्व नहीं था कि आप कहाँ से आए हैं। हमारी कलीसियाओं को आज यीशु के उदाहरण का अनुसरण करना चाहिये।

परिचय

(निम्नलिखित प्रश्नों में से दो या तीन प्रश्नों को चुनें व समूह से पूछें)

- क्या आप कभी किसी के शिष्य (या विद्यार्थी) बन कर रहे हैं? हो सकता है कि यह मार्गदर्शक के साथ, विद्यालय का समय, या किसी कार्यस्थल में प्रशिक्षण का समय रहा हो। आपने उनसे क्या सीखा? आपने इसे कैसे सीखा?
- यीशु ने लोगों को उसका चेला बनने तथा "उसका अनुसरण" करने का व्यक्तिगत् आमंत्रण क्यों दिया? यीशु शिक्षा देते समय या चमत्कार करते समय अपने चारों ओर लोगों को क्यों इकट्ठा करना चाहते थे?
- यदि आप यीशु के चेलों के स्थान पर होते, और यीशु आपसे अपनी नौकरी, अपना घर, अपना सब कुछ छोड़ कर उसका अनुसरण करने के लिये कहते, तो आपके लिये किस वस्तु को पीछे छोड़ना सबसे मुश्किल होता?
- *आप अपने एक प्रतिभागी से आपके पास खड़े होकर, एक 'शिष्य' का नाट्य रूप प्रस्तुत करने के लिए कह सकते हैं। आप उनसे अपनी क्रियाओं को दोहराने के लिए कहें। आप उनसे कुछ साधारण कार्य करने के लिए कहें, – जैसे कागज़ को किसी विशेष आकार में तह बनवाएँ?, चाय तैयार करें, जूते के फीते बांधें, शारीरिक व्यायाम करें। अपने कामों को करें और 'चेलों' द्वारा बिल्कुल वैसे ही कार्य करने पर उसकी सराहना करें। बताएँ कि एक चेला होने का अर्थ यही है – एक विद्यार्थी जो अपने गुरू को देखकर वैसा ही काम करता है।*

अध्ययन

समूह को निम्नलिखित बिन्दुओं पर शिक्षा दें।

शिक्षाएँ

- **यीशु : सम्बन्धों द्वारा परिवर्तन :** यीशु ने अपने राज्य की शुरूआत सैन्य शक्ति, राजनैतिक रैलियों, या परम्परागत् शक्ति या अधिकार के साथ नहीं किया। बल्कि उसने असिद्ध या ज़रूरतमन्द लोगों से रिश्ता बनाया, और उनके जीवन को परिवर्तित कर दिया, जैसा वह आज भी करता है।

  - यीशु ने अपने राज्य की स्थापना करने तथा सुसमाचार फैलाने के लिये धनी, शक्तिशाली, या समाज में उच्च अधिकारों पर बैठे अधिकारियों की खोज नहीं की। बल्कि इस के विपरीत, उसने अयोग्य व कमज़ोर लोगों को चुना, जो विश्वास से उसका अनुसरण करने के लिये तैयार थे।

  - साधारण लोग, जो भी अच्छा कार्य कर जाते, उसके लिये परमेश्वर को महिमा देते। जबकि बुद्धिमान व सामर्थी लोग, उन्हीं कामों को करने पर सारा श्रेय सम्भवतः स्वयं ले लेते। इसके बजाए, जो कुछ हुआ, वह सब परमेश्वर का कार्य था (प्रेरितों के काम 4:13)।

- **साधारण लोग यीशु को प्रेम करते थे :** यीशु की शिक्षाओं को सुनने हेतु इकट्ठे होने वाले लोग, जीवन के अलग–अलग क्षेत्रों में काम करने वाले सामान्य लोग थे। यीशु ने ऐसे लोगों का स्वागत् किया, जो समाज द्वारा ठुकराए हुए, ग़रीब व तुच्छ लोग थे।

  - **यीशु ने कंगालों को सुसमाचार सुनाने की भविष्यद्वाणी को पूरा किया :** यीशु कंगालों के पास गया, और जाकर उन्हें उद्धार का, अनन्त जीवन का तथा स्वर्गीय खजाने का सुसमाचार सुनाया। लोग बहुत तरीके से ग़रीब हो सकते हैं, जिस में आर्थिक तंगी, सामाजिक ग़रीबी व आत्मिक ग़रीबी शामिल है (लूका 4:17–19)।

    - यीशु ने ग़रीबों का बचाव किया (मरकुस 12:41–44)।
    - यीशु ने कहा कि स्वर्ग का राज्य दीन लोगों का है (लूका 6:20)। इस शिक्षा को इस याकूब की पुस्तक में भी प्राप्त कर सकते हैं (जिसे यीशु के आधे भाई द्वारा लिखा गया था) (याकूब 2:1–8)।
    - यीशु ने कोढ़ियों, अशुद्ध जनों, व अछूत लोगों को छुआ। उसने उन्हें चंगा किया और उन्हें प्रेम किया (लूका 5:12–14)।

  - **यीशु ने बच्चों का स्वागत किया :** यीशु बच्चों को तुच्छ न जाना, बल्कि उसने उनका स्वागत् किया, तथा उनके महत्व पर ज़ोर डाला। अधिकतर समय यीशु के साथ बच्चों को पाया गया। यीशु के समय में बच्चों को देखने के दृष्टिकोण से यह बात काफी अलग नज़र आती है।

    - बच्चों को यीशु के सन्देशों को समझने की शक्ति दी गई (मत्ती 11:25–26)।
    - यीशु ने सिखाया कि हमें बच्चों को समान नम्र बनना चाहिये (मत्ती 18:1–4)।
    - यीशु बच्चों से प्रेम करता व उनका स्वागत् करता है (लूका 18:15–17)।
    - बच्चों ने यीशु को प्रेम किया व उसकी आराधना की; जबकि बुद्धिमान (जो अपनी स्वयं की दृष्टि में बुद्धिमान थे) उसकी हंसी उड़ाते थे (मत्ती 21:15–16)।

  - **यीशु, पापियों का मित्र :** यीशु पर पापियों व चुंगी लेने वालों को मित्र होने का आरोप था। हालांकि यीशु ने कभी उनको पाप करने को प्रात्साहित नहीं किया था, उसने केवल पापियों के साथ भोजन किया,

उनके साथ बातचीत की, और उनके साथ विनम्रता से व्यवहार किया। इन बातों को देखकर उस समय के अधिकारी क्रोधित हो गए। यीशु ने लोगों पर न ता दोष लगाया और न ही उन्हें दण्ड दिया, बल्कि उसने उन्हें प्रेम किया, उनसे दोस्ती की, तथा उन्हें पश्चाताप व विश्वास करने के लिये आमंत्रित किया।

- यीशु ने बहुत से लोगों के साथ भोजन बाँट कर खाया, जिस में जाने–माने पापी भी शामिल थे। उन्हें यीशु के साथ रहना अच्छा लगता था (मत्ती 9:10–12; लूका 15:2)।
- यीशु ने व्यभिचार में पकड़ी गई स्त्री को दण्ड नहीं दिया, बल्कि उससे पश्चाताप करने के लिये कहा (लूका 8:1–11)।
- यीशु ने एक चुंगी लेने वाले जक्कई के साथ भोजन करने का चुनाव किया (जो सामान्यतः लोगों से अधिक पैसा वसूल किया करता था)। लेकिन यीशु को देखने के बाद, जक्कई ने पश्चाताप कर के यीशु पर विश्वास किया (लूका 19:1–10)।

❖ **साधारण चेलों ने यीशु का अनुसरण किया :** यीशु के समयकाल में जब कोई महान् या विशेष शिक्षक नगर–नगर जाकर शिक्षा दिया करता था – तो चेले या अनुयायी सामान्यतः उसके साथ हो लिया करते थे। इन चेलों को जहाँ कहीं, कैसा भी काम मिल जाता था, वे अपने गुरू के कार्य में सहायता करने के लिये काम करने लगते थे। वे स्वयं दूसरों को शिक्षा देने के द्वारा भी अपने गुरू की सहायता किया करते थे। चेले हमें दिखाते हैं कि परमेश्वर विश्वास करने वाले साधारण लोगों को अपने राज्य में बड़े–बड़े काम करने के लिये उपयोग करते हैं।

➢ **चेलों का बुलाया जाना :** हम बहुत सी जगहों पर यीशु द्वारा चेलों के चुने जाने के उल्लेख को पाते हैं :

- यीशु ने बारह विशेष लोगों को अपना अनुसरण करने के लिये बुलाया (मत्ती 10:1–4)।
- शमौन पतरस जब यीशु से मिला, तब वह एक मछुआरा था। वह रात भर मछली पकड़ने के लिये संघर्ष कर रहा था, तब यीशु ने उसके जीवन में चमत्कार किया और उसका जाल मछलियों से भर गया (लूका 5:1–11)। शमौन पतरस डर गया, क्योंकि वह जानता था कि वह पापी था, और वह यीशु के नज़दीक खड़े होने के काबिल नहीं था; लेकिन इसी कारण यीशु ने उसे बुलाया। यीशु ने अपने चेलों से कहा कि वे "अब मनुष्यों को पकड़ने वाले कहलाएँगे"। उसी दिन **शमौन पतरस** और उसके भाई **अन्द्रियास** ने अपना सब कुछ छोड़ दिया, और यीशु के पीछे हो लिये।
- **याकूब और यूहन्ना** भी मछुआरे थे; उन्होंने भी यीशु का अनुसरण करने के लिये अपना सब कुछ त्याग दिया। ऐसा प्रतीत होता है कि वे जवान लड़के थे, क्योंकि बाइबल में बताया गया है कि "उन्होंने अपने पिता का घर छोड़ दिया" (मत्ती 4:21–22)।
- **मत्ती** एक चुंगी लेने वाला था, जब यीशु ने उसे बुलाया (कई सुसमाचारों में उसे लेवी के नाम से भी जाना जाता है)। यीशु ने बहुत सरल तरीके से मत्ती को अपने पीछे होने के लिये कह दिया (मत्ती 9:9)।
- **नतनएल** और **फिलिप्पुस** बुलाए जाने के समय बैतसैदा में थे। पहले तो नतनएल को सन्देह हुआ, परन्तु यीशु से मिलकर व उसकी भविष्यद्वाणी सुनने के बाद, वह भी अपना सब कुछ छोड़कर यीशु के पीछे हो लिया (यूहन्ना 1:43–46)।
- **यीशु ने और भी बहुत से लोगों को बुलाया, जो प्रेरित नहीं बने। कई पीछे हो लिए और कई वापिस चले गए** (लूका 9:59–61; मरकुस 10:21–22)।

➢ **चेलों को प्रशिक्षित करना व भेजना:** यीशु ने अपना ध्यान केवल 12 लोगों को ही शिक्षा देने लगाया (हालांकि अन्य चेले, स्त्रियां, अधिकतर लोग उसके आसपास रहा करते थे)। यीशु ने उन्हें प्रशिक्षित किया और दूसरों को सुसमाचार सुनाने के लिये भेज दिया।

- **यीशु ने चेलों को अपने संदेश सिखाए** (मत्ती 11:1)।

- **यीशु ने चेलों को अपने नज़दीक रखा, ताकि वे उसे देखकर विश्वास कर सकें** (मरकुस 3:7)।
- **चेलों ने यीशु के निर्देशों के अनुसार ही किया** (मत्ती 21:6; मत्ती 26:19)।
- **यीशु ने अपने चेलों की सहायता से अपनी शिक्षा का विस्तार किया** – उसने सुसमाचार प्रचार करने के लिये दो–दो कर के 72 लोगों को भेजा (लूका 10:1–9)।
- **यीशु ने दूसरे चेले बनाने के लिये प्रार्थना के साथ 12 चेलों को नियुक्त किया** (मरकुस 3:13–19)।

➢ **साधारण लोग :** हालांकि उन्होंने अपना पूरा समय यीशु के साथ बिताया, लेकिन वे संघर्ष करने वाले साधारण लोग थे। वे सिद्ध अनुयायी नहीं, बल्कि वे अपने पापों को मानने वाले थे और वे देख सकते थे कि यीशु उनकी आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं।

- **चेलों ने संदेह किया :** हालांकि यीशु ने उन्हें पहले ही बता दिया था कि वह मर कर फिर जी उठेगा, लेकिन कुछ लोगों ने फिर भी उसके पुनरूत्थान के बाद उस पर शक किया (मत्ती 28:16–18; लूका 24:38)।
- **एक चेले ने यीशु को पहचानने से इनकार कर दिया :** भले ही वे यीशु के साथ रहा करते थे, जिनमें से एक शमौन पतरस ने यीशु को पहचानने से मना कर दिया (यूहन्ना 18:15–18, यूहन्ना 18:25–27)।
- **चेले कमज़ोर थे :** जब यीशु ने चेलों को जागते रहने के लिये कहा, वे लोग यह छोटा सा काम भी न कर सके (मत्ती 26:36–45)।

❖ **असाधारण चीजों को स्थापित करने के लिये परमेश्वर साधारण लोगों को उपयोग करता है :** यीशु अपनी जमीनी सेवकाई में लोगों के साथ अत्याधिक प्रेम के साथ व्यवहार किया करते थे। जो लोग दूसरों को दबाते, तथा दूसरे लोगों का फायदा उठाते थे, वह उनसे कठोर व्यवहार करता था; परन्तु अपने पापों को मानने वाले तथा पश्चाताप करने वालों पर कृपा करता था। यीशु ने दूसरे लोगों को सुसमाचार सुनाने के लिये साधारण बल्कि अनपढ़ लोगों को तैयार किया।

➢ **यीशु ने उन्हें चेले बनाने का आदेश दिया :** यीशु ने उन्हें सिखाया कि परमेश्वर का राज्य एक–एक व्यक्ति कर के ही बढ़ेगा; और उसने चेलों को दूसरों को सिखाना और चेला बनाना सिखाया (मत्ती 28:19)। इन चेलों की वजह से यीशु का संदेश नये और विश्वासयोग्य चेलों के माध्यम से सारे जगत के छोर तक पहुँच गया!

➢ **चेलों ने मृत्यु तक यीशु की शिक्षाओं का अनुसरण किया :** अपनी असिद्ध व्यवस्था के बावजूद "यीशु के चेलों ने अपनी मृत्यु तक यीशु की शिक्षाओं को माना" (1 कुरिन्थियों 4:9; प्रेरितों के काम 7:54–60)। सुसमाचार की खातिर उन्होंने यीशु की तरह मरने को अपना सौभाग्य समझा, और उन्होंने बड़े साहस के साथ मृत्युदण्ड भी सह लिया।

➢ **यीशु ने उन्हें सामर्थ्य दी:** चेलों को चमत्कार प्रस्तुत करने की आज्ञा दी गई थी, और उन्होंने यीशु के संदेश को सही साबित करते हुए, यीशु के नाम से बहुत से महान् कामों को किया (प्रेरितों के काम 1:8; प्रेरितों के काम 4:16; प्रेरितों के काम 5:12; प्रेरितों के काम 5:16)।

➢ **यीशु ने उनकी संख्या को बढ़ाया :** यीशु का अनुसरण करने वालों की संख्या दिन–प्रतिदिन बढ़ती चली गई (प्रेरितों के काम 2:46–47; प्रेरितों के काम 6:7)।

❖ **यीशु आपसे प्रेम करता है :** यीशु ने कभी भी लोगों को अपमानित नहीं किया, बल्कि उसने उनके भीतर प्रेम व भक्ति को उत्पन्न किया। यीशु ने उन्हें जैसे का तैसा स्वीकार किया और उनको प्रेम किया। जब ये साधारण लोग परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा करने लगे, तो उनके लिये महान कामों को करना सरल हो गया। हम में से प्रत्येक जन यीशु का चेला या मित्र बन सकता है; और पृथ्वी के प्रत्येक व्यक्ति तक क्षमा का सुसमाचार ले जाने की परमेश्वर की योजना का हिस्सा बन सकता है। यीशु हम से प्रेम करता है, और वह चाहता है कि हम जहाँ कहीं भी हों, उसके इस साहसिक कार्य का भाग बन जाएँ। आप यीशु की बुलाहट का किस प्रकार प्रतिउत्तर देंगे?

चर्चा

- यीशु का प्रेम द्वारा लोगों की अगुवाई करना आजकल के अगुवों की अगुवाई से भिन्न क्यों है (विशेषकर सैन्य व राजनेताओं के मध्य में)?
- आपके विचार से, हमेशा भीड़ से घिरे रहने के बजाए, यीशु ने अपना ध्यान व्यक्तिगत तौर पर शिक्षा देने व प्रेम करने पर क्यों लगाया? यह सम्भवतः कम प्रभावशाली दिखे, मगर इसका क्या परिणाम था?
- मसीहियत, यीशु मसीह का चेला होने का एक आत्मिक क्षण है। किस प्रकार संसारभर में मसीहियत का विस्तार हुआ? इसे आपके स्थानीय क्षेत्र में किस प्रकार पाया जा सकता है, और यह किस प्रकार फैल रही है?
- क्या आप अपनी साधारण अवस्था में, यीशु के प्रेम को देख पाते हैं? यीशु आपके जीवन में क्या कर सकते हैं?
- अगर आपको यीशु की ओर से चेला होने हेतु आने व अनुसरण करने का निमंत्रण मिले, तो आपका प्रतिउत्तर क्या होगा?

प्रार्थना

प्रार्थना के साथ समाप्त करें। प्रार्थना करें कि आपके प्रतिभागी अपने पूरे मन व पूर्ण जीवन से यीशु के पीछे हो लें। प्रार्थना करें कि वे अपनी सामान्य व साधारण अवस्था को परमेश्वर का वरदान जानें, व समझें कि यीशु को जानने से बढ़कर कुछ और नहीं है। प्रार्थना करें कि यीशु की कलीसिया बढ़कर धरती के हर कोने को भर दे, और बहुत से लोग उसके चेले बनें, जो स्वेच्छा से अपना क्रूस उठाकर उसका अनुसरण करने को तैयार हैं।